आधुनिक सिद्धांत (सिस्टम दृष्टिकोण)

प्रबंधन के लिए सिस्टम दृष्टिकोण आधुनिक सिद्धांत नामक प्रबंधन विचार के चौथे प्रमुख सिद्धांत को इंगित करता है। आधुनिक सिद्धांत एक संगठन को एक अनुकूली प्रणाली के रूप में मानता है जिसे अपने पर्यावरण में परिवर्तन के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है। एक संगठन को अब एक संरचित प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें व्यक्ति उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बातचीत करते हैं।

"सिस्टम" का अर्थ

सिस्टम शब्द ग्रीक शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है एक साथ लाना या जोड़ना। एक प्रणाली कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परस्पर और परस्पर संबंधित तत्वों या घटक भागों का एक समूह है। एक प्रणाली में तीन महत्वपूर्ण भाग होते हैं:

1. प्रत्येक प्रणाली लक्ष्य-उन्मुख होती है और इसे प्राप्त करने के लिए एक उद्देश्य या उद्देश्य होना चाहिए।
2. प्रणाली को डिजाइन करने में हमें घटकों की आवश्यक व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए।
3. सूचना, सामग्री और ऊर्जा के आदानों को योजना के अनुसार प्रसंस्करण के लिए आवंटित किया जाता है ताकि आउटपुट सिस्टम के उद्देश्य को प्राप्त कर सकें।

एक संगठन के लिए लागू सिस्टम दृष्टिकोण:

जब संगठन के लिए सिस्टम दृष्टिकोण लागू किया जाता है, तो हमारे पास एक खुली अनुकूली प्रणाली के रूप में संगठन की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं: -

1. यह अपने व्यापक पर्यावरण की एक उप-प्रणाली है।
2. यह एक लक्ष्य-उन्मुख है - एक उद्देश्य वाले लोग।
3. यह एक तकनीकी उपप्रणाली है - ज्ञान, तकनीकों, उपकरणों और सुविधाओं का उपयोग करना।
4. यह एक संरचनात्मक उपतंत्र है - परस्पर संबंधित गतिविधियों पर एक साथ काम करने वाले लोग।
5. यह एक मनोसामाजिक व्यवस्था है - सामाजिक संबंधों में लोग।
6. यह एक प्रबंधकीय उप प्रणाली द्वारा समन्वित है, जो निर्धारित लक्ष्यों की ओर निर्देशित समग्र प्रयासों को बनाने, योजना बनाने, व्यवस्थित करने, प्रेरित करने, संचार करने और नियंत्रित करने के लिए है।

Dr. Ashish Mohan

आधुनिक प्रबंधन विचार के लक्षण:

1. सिस्टम दृष्टिकोण:

एक प्रणाली के रूप में एक संगठन के पाँच मूल भाग होते हैं -

- इनपुट
- प्रक्रिया
- आउटपुट
- प्रतिक्रिया और
- वातावरण।

यह कुछ वांछनीय आउटपुट उत्पन्न करने के लिए इनपुट के लिए पर्यावरण को आकर्षित करता है। फीडबैक के माध्यम से इन आउटपुट की सफलता का अंदाजा लगाया जा सकता है। यदि आवश्यक हो, तो हमें बदलती मांगों के अनुसार उत्पादन के लिए इनपुट के मिश्रण को संशोधित करना होगा।

2. गतिशील:

हमारे पास एक संगठन की संरचना के भीतर होने वाली बातचीत की एक गतिशील प्रक्रिया है। एक संगठन और उसकी संरचना का संतुलन स्वयं गतिशील या परिवर्तनशील होता है।

3. बहुस्तरीय और बहुआयामी:

सिस्टम दृष्टिकोण जटिल बहुस्तरीय और बहुआयामी चरित्र को इंगित करता है। हमारे पास सूक्ष्म और स्थूल दोनों दृष्टिकोण हैं। एक कंपनी एक व्यापार प्रणाली के भीतर सूक्ष्म है। यह अपनी आंतरिक इकाइयों के संबंध में मैक्रो है। एक कंपनी के भीतर एक प्रणाली के रूप में हमारे पास है: -

- उत्पादन सबसिस्टम
- वित्त सबसिस्टम
- मार्केटिंग सबसिस्टम
- कार्मिक सबसिस्टम।

Dr. Ashish Mohan

सभी भाग या घटक परस्पर जुड़े हुए हैं। दोनों भागों के साथ-साथ संपूर्ण भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। सभी स्तरों पर, संगठन कई तरह से परस्पर क्रिया करते हैं।

4. <u>बहु-प्रेरित:</u>

शास्त्रीय सिद्धांत ने एक ही उद्देश्य ग्रहण किया, उदाहरण के लिए, लाभ। सिस्टम दृष्टिकोण यह मानता है कि हमारे कार्यों और व्यवहार के पीछे कई प्रेरणाएँ हो सकती हैं। प्रबंधन को इन बहुउद्देश्यीय उद्देश्यों से समझौता करना पड़ता है, जैसे: - आर्थिक उद्देश्य और सामाजिक उद्देश्य।

5. <u>बहुआयामी:</u>

सिस्टम दृष्टिकोण विभिन्न विचारधाराओं से उभरने वाले लाभ विचारों के साथ एकीकृत और उपयोग करता है। प्रबंधन स्वतंत्र रूप से अध्ययन के कई क्षेत्रों जैसे मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, पारिस्थितिकी, अर्थशास्त्र, गणित आदि से अवधारणाओं और तकनीकों को आकर्षित करता है।

6. <u>बहुविकल्पीय:</u>

यह माना जाता है कि कोई साधारण कारण-प्रभाव घटना नहीं है। एक घटना इतने सारे कारकों का परिणाम हो सकती है जो स्वयं परस्पर संबंधित और अन्योन्याश्रित हैं। कुछ कारक नियंत्रित होते हैं, कुछ अनियंत्रित। इन परिवर्तनशील कारकों का सामना करने के लिए बुद्धिमान योजना और नियंत्रण आवश्यक है।

7. <u>अनुकूली:</u>

एक गतिशील वातावरण में एक संगठन का अस्तित्व और विकास एक अनुकूली प्रणाली की मांग करता है जो लगातार बदलती परिस्थितियों में समायोजित हो सके। एक संगठन एक खुली प्रणाली है जो फीडबैक की प्रक्रिया के माध्यम से स्वयं को अनुकूलित करती है।

8. <u>संभाव्यता:</u>

प्रबंधन के सिद्धांत केवल संभाव्यता की ओर इशारा करते हैं और प्रदर्शन की निश्चितता और परिणामी परिणामों की कभी नहीं। हमें एक साथ इतने सारे चरों का सामना करना पड़ता है। हमारे पूर्वानुमान केवल प्रवृत्तियां हैं। इसलिए, बुद्धिमान पूर्वानुमान और योजना अनिश्चितता की डिग्री को काफी हद तक कम कर सकती है।

Dr. Ashish Mohan

आकस्मिकता सिद्धांत:

सिस्टम दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि पर्यावरण की सुपर सिस्टम के साथ एक संगठन के सभी उप-प्रणालियां आपस में जुड़ी हुई हैं और आपस में जुड़ी हुई हैं। आकस्मिकता दृष्टिकोण विश्लेषण और इन अंतर संबंधों को समझता है ताकि प्रबंधकीय कार्यों को विशिष्ट स्थितियों या परिस्थितियों की मांगों के लिए समायोजित किया जा सके।

इस प्रकार आकस्मिक दृष्टिकोण हमें समाधान की मांग करने वाली समस्याओं के व्यावहारिक उत्तर विकसित करने में सक्षम बनाता है। विशिष्ट परिस्थितियों के लिए सबसे उपयुक्त संगठन डिजाइन और प्रबंधकीय कार्यों को दी गई स्थिति के तहत सर्वोत्तम संभव परिणाम प्राप्त करने के लिए अपनाना होगा। व्यवस्थित करने और प्रबंधित करने का कोई सबसे अच्छा तरीका नहीं है (जैसा कि टेलर द्वारा वकालत की गई है)। इस प्रकार, प्रबंधन के लिए आकस्मिक दृष्टिकोण इस तथ्य पर जोर देता है कि प्रबंधन एक अत्यधिक अभ्यास-उन्मुख अनुशासन है। यह प्रबंधकों का मूल कार्य है कि वे अपनी तकनीकों, प्रक्रियाओं और प्रथाओं को अपनाने से पहले उन वातावरणों का विश्लेषण और समझ करें जिनमें वे कार्य करते हैं। इसलिए प्रबंधन सिद्धांतों और प्रथाओं का अनुप्रयोग मौजूदा परिस्थितियों पर निर्भर होना चाहिए।

आकस्मिक दृष्टिकोण प्रबंधक को पर्यावरण के अनुकूल होने के लिए मार्गदर्शन करता है। यह प्रबंधक को व्यावहारिक और खुले विचारों वाला बताता है। आकस्मिक दृष्टिकोण प्रणाली दृष्टिकोण पर एक सुधार है। यह न केवल संगठन की उप-प्रणालियों के बीच संबंधों की जांच करता है, बल्कि संगठन और उसके पर्यावरण के बीच संबंधों की भी जांच करता है।

हालाँकि, आकस्मिक दृष्टिकोण दो सीमाओं से ग्रस्त है: -

1. यह पर्यावरण पर प्रबंधन अवधारणाओं और तकनीकों के प्रभाव को नहीं पहचानता है।
2. आकस्मिकता प्रबंधन पर साहित्य अभी पर्याप्त नहीं है।

Dr. Ashish Mohan